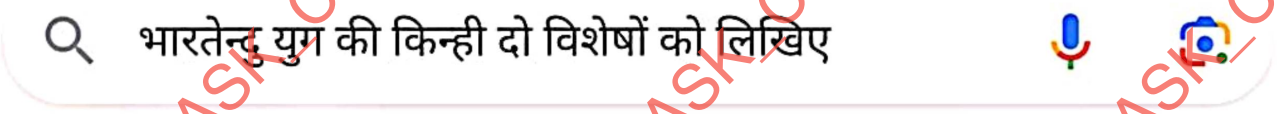

भारतेन्दु युग की किन्ही दो विशेषों को लिखिए

सभी वीडियो इमेज समाचार शॉपिंग किताबें मैप खोज टूल

इसके परिणाम दिखाए जा रहे हैं भारतेन्दु युग की *किन्हीं* दो विशेषों को लिखिए

इसके बजाय इसे खोजें भारतेन्दु युग की किन्ही दो विशेषों को लिखिए

06

Search in English bharatendu Yug ki kinhi do vi...

इसे सुनें

भारतेन्दुयुगीन कविता की मुख्य विशेषताएँ इस युग की अधिकांश कविता वस्तुनिष्ठ एवम् वर्णनात्मक है। छंद, भाषा एवम् अभिव्यंजना पद्धति में प्राचीनता अधिक है, नवीनता कम। खड़ी बोली का आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था किन्तु कविता के क्षेत्र में ब्रज ही सर्वमान्य भाषा रही।

W https://hi.m.wikipedia.org › wiki

भारतेन्दु युग - विकिपीडिया

फ़ीचर्ड स्निपेट के बारे में जानकारी सुझाव/राय दें या शिकायत करें

@ASK_Classes

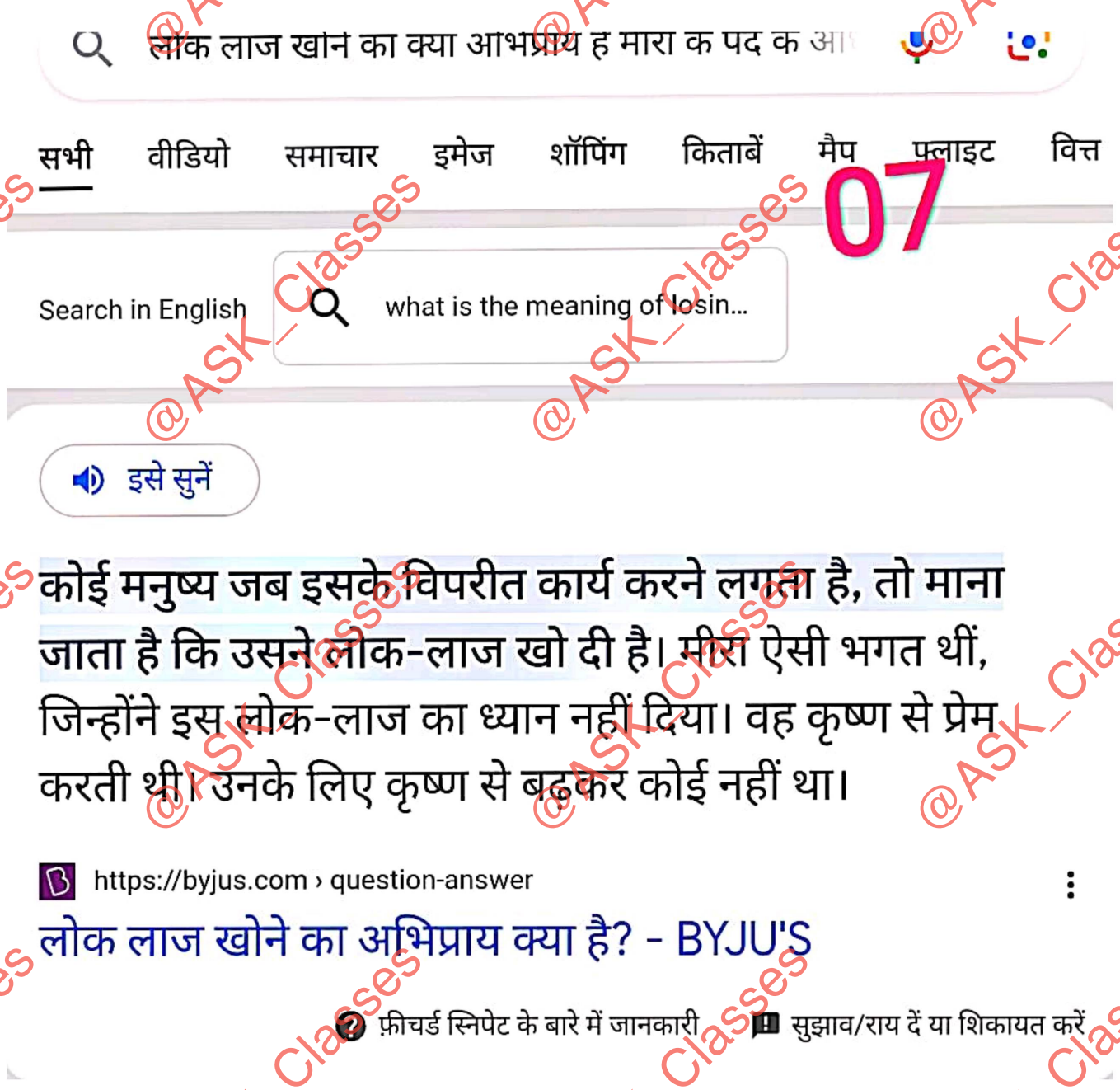
लोक लाज खोने का क्या आभप्राय ह मारा क पद क आ
सभी
वीडियो
समाचार
इमेज
शॉपिंग
किताबें
मैप
फ्लाइट
वित्त
07
Search in English
what is the meaning of losin...
इसे सुनें
कोई मनुष्य जब इसके विपरीत कार्य करने लगता है, तो माना जाता है कि उसने लोक-लाज खो दी है। मीरा ऐसी भगत थीं, जिन्होंने इस लोक-लाज का ध्यान नहीं दिया। वह कृष्ण से प्रेम करती थी। उनके लिए कृष्ण से बढ़कर कोई नहीं था।
https://byjus.com › question-answer
लोक लाज खोने का अभिप्राय क्या है? - BYJU'S
फ़ीचर्ड स्निपेट के बारे में जानकारी
सुझाव/राय दें या शिकायत करें

स्पष्टीकरण

वीभत्स रस की परिभाषा

घृणित वस्तु, दृश्य या व्यापार से उत्पन्न घृणा के चित्रण में वीभत्स रस होता है। अधजले शव से दुर्गंध, कुत्तों – गिद्धों द्वारा मांस नोच-नोच कर खाना, सड़े घाव या अंग वाला व्यक्ति या जानवर, मल-मूत्र की जगह, उल्टी आदि इस रस के आलंबन होते हैं।

08

वीभत्स रस के अवयव

1.स्थायी भाव – जुगुप्सा
2.आलम्बन – मांस, रक्त, अस्थि, श्मशान, दुगन्ध
3.उद्दीपन – रक्त, मास आदि का सड़ना, कुत्ते-गिद्ध आदि द्वारा शव नोंचना
4.अनुभाव – थूकना नाक-भौं सिकोड़ना, रोमांच
5.संचारी भाव – माह, जड़ता, व्याधि

वीभत्स रस के उदाहरण एवं स्पष्टीकरण

उदाहरण – 1

रिपु-आँतन की कुंडली करि जोगिनी चबात।
पीबहि में पागी मनो जुवति जलेबी खात ॥

स्पष्टीकरण – रस – वीभत्स। स्थायी भाव- जगप्सा आश्रय- दर्शक।

@ASK_Classes

दृष्टांत अलंकार की परिभाषा

जहाँ पहले कोई बात कहकर, उससे मिलती-जुलती बात द्वारा दृष्टान्त दिया जाय; लेकिन समानता किसी शब्द द्वारा प्रकट न हो, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है।

अर्थात

जब दो वाक्यों में दो भिन्न बातें बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव से प्रकट की जाती हैं, उसे दृष्टान्त अलंकार कहते हैं। इस प्रकार दृष्टान्त में उपमेय, उपमान और उनके साधारण धर्म बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से परस्पर सम्बद्ध रहते हैं।

उदाहरण – *सठ सुधरहिं सत संगति पाई।*
पारस परस कुधात सुहाई॥

स्पष्टीकरण – यहाँ सत्संगति से सठ का सुधरना वैसा ही है, जैसे पारसमणि के स्पर्श से कुधातु का चमकना। यहाँ प्रथम वाक्य की सत्यता प्रतिपादित करने के लिए दृष्टान्त रूप से दूसरा वाक्य आया है।

उदाहरण – *सठ सुधरहिं सत संगति पाई।*
पारस परसि कुधातु सुहाई।।

Advertisement

10

SOLUTION

मियाँ नसीरुद्दीन की निम्नलिखित बातें हमें अच्छी लगीं-

(क) वे काम को अधिक महत्त्व देते हैं। बातचीत के दौरान भी उनका ध्यान अपने काम में होता है।

(ख) वे हर बात का उत्तर पूरे आत्मविश्वास के साथ देते हैं।

(ग) वे शागिर्दों का शोषण नहीं करते। उन्हें काम भी सिखाते हैं तथा वेतन भी देते हैं।

(घ) वे छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने में माहिर हैं।

(ङ) उनकी बातचीत की शैली आकर्षक है।

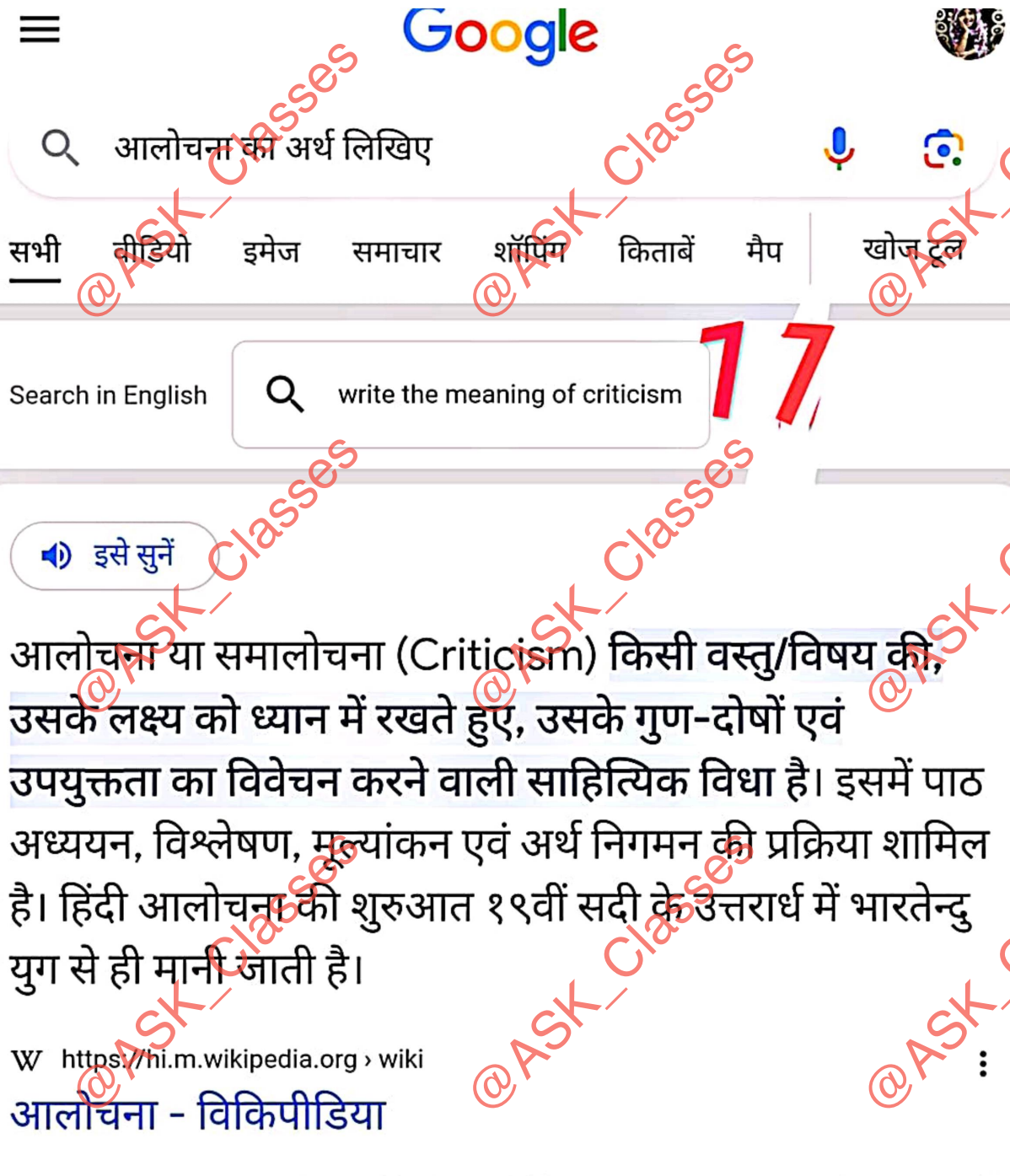
Google
आलोचना का अर्थ लिखिए
सभी वीडियो इमेज समाचार शॉपिंग किताबें मैप खोज टूल
Search in English
write the meaning of criticism
11
इसे सुनें
आलोचना या समालोचना (Criticism) किसी वस्तु/विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण-दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली साहित्यिक विधा है। इसमें पाठ अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं अर्थ निगमन की प्रक्रिया शामिल है। हिंदी आलोचना की शुरुआत १९वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतेन्दु युग से ही मानी जाती है।
https://hi.m.wikipedia.org › wiki
आलोचना - विकिपीडिया
फ़ीचर्ड स्निपेट के बारे में जानकारी
सुझाव/राय दें या शिकायत करें
लोग यह भी जानना चाहते हैं
आलोचना का महत्व क्या है?
आलोचना कितने प्रकार के होते हैं?

कृति की व्याख्या और विश्लेषण के लिए आलोचना में पद्धति और प्रणाली का महत्त्व होता है।

https://newcollege.ac.in › CMS PDF

आलोचना (साहित्य)

फ़ीचर्ड स्निपेट के बारे में जानकारी सुझाव/राय दें या शिकायत करें

लोग यह भी जानना चाहते हैं

आलोचना की विशेषता क्या है?

आलोचना या समालोचना (Criticism) किसी वस्तु/विषय की, उसके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, उसके गुण-दोषों एवं उपयुक्तता का विवेचन करने वाली साहित्यिक विधा है। इसमें पाठ अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन एवं अर्थ निगमन की प्रक्रिया शामिल है। हिंदी आलोचना की शुरुआत १९वीं सदी के उत्तरार्ध में भारतेन्दु युग से ही मानी जाती है।

W https://hi.m.wikipedia.org › wiki

आलोचना - विकिपीडिया

ज़्यादा नतीजे

नई आलोचना की पांच प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?

आलोचना कितने प्रकार के होते हैं?

HINDI 12

Que : 31. राष्ट्र भाषा किसे कहते हैं ? राष्ट्र भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए ।
or राष्ट्रभाषा की चार विशेषताएँ

Answer: किसी भी देश या राष्ट्र द्वारा किसी भाषा को जब अपने किसी राजकार्य के लिए भाषा घोषित किया जाता है या अपनाया जाता है तो उसे राष्ट्र भाषा जाना जाता है। अर्थात जब कोई देश किसी भाषा को अपनी राष्ट्र की भाषा घोषित करता है तो उसे ही राष्ट्र भाषा के लिए जाना जाता है।

@ASK_Classes

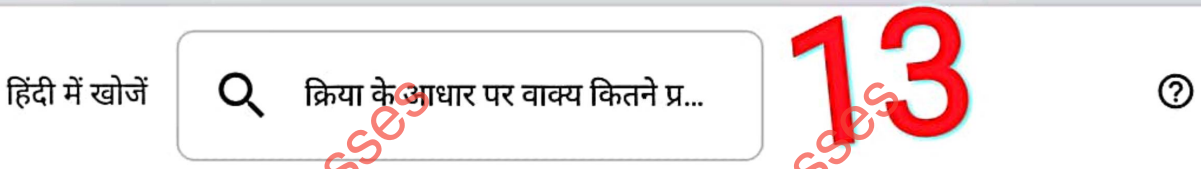

Google

क्रिया के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं

सभी | इमेज | वीडियो | शॉपिंग | समाचार | किताबें | मैप | Search tool

हिंदी में खोजें | क्रिया के आधार पर वाक्य कितने प्र...

13

इसे सुनें

विधानवाचक, निषेधवाचक, आज्ञावाचक, विस्मयवाचक, संकेतवाचक, संदेहवाचक, प्रश्नवाचक तथा इच्छावाचक। विशेष: वाक्य - शब्दों का वह व्यवस्थित रूप जिसमें विचारों का आदान - प्रदान होता है। 25 Jan 2022

https://testbook.com › हिन्दी-म...

हिन्दी में आधारभूत वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? - Testbook

About featured snippets | Feedback

People also ask

वाक्य के कितने प्रकार होते हैं?

7 प्रकार के वाक्य कौन से हैं?

@ASK_Classes

Brainly.in
https://brainly.in › question

14

कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है?

14 Apr 2021 — कुंई का मुँह छोटा रखने के निम्नलिखित तीन बड़े कारण हैं:- 1)रेत में जमा पानी कुंई में बहुत धीरे-धीरे रिसता है। अतः मुँह छोटा हो ...

Top answer · 19 votes

कुंई का मुँह छोटा रखने के निम्नलिखित तीन बड़े कारण हैं:- 1)रेत ... More

People also ask

कुई का मुँह छोटा रखने के क्या कारण हैं लिखिए?

1)रेत में जमा पानी कुंई में बहुत धीरे-धीरे रिसता है। अतः मुँह छोटा हो तभी प्रतिदिन जल स्तर पानी भरने लायक बन पाता है। 10 Apr 2019

https://brainly.in › question

[Answered] कुंई का मुँह छोटा रखने के क्या कारण हैं? - Brainly.in

@ASK_Classes

Google
पटकथा लिखते समय किन किन बातों का ध्यान रखना
सभी
वीडियो
इमेज
समाचार
शॉपिंग
किताबें
मैप
फ़्लाइट
वित्त
हिंदी में खोजें
पटकथा लिखते समय किन किन बा...
15
इसे सुनें
पटकथा लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक दृश्य के साथ होने वाली घटना के समय का संकेत भी दिया जाना चाहिए। ... प्रत्येक दृश्य के साथ होने की सूचना देनी चाहिए। प्रत्येक दृश्य के साथ उस दृश्य के घटनास्थल का उललेख अवश्य करना चाहिए; जैसे-कमरा, बरामदा, पार्क, बस स्टैंड, हवाई अड्डा, सड़क आदि। 5 Jan 2021
https://brainly.in › question
पटकथा लिखते समय किन किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होना है और क्यों - Brainly.in
About featured snippets
Feedback
People also ask
पटकथा लिखते समय आपने सबसे पहले किन बातों पर विचार किया?
पटकथा की संरचना में किस किसका ध्यान रखते है?
पटकथा लेखन के लिए क्या आवश्यक है?
पटकथा लेखन के आवश्यक तत्व कौन से है?

प्रश्न 2. भवानी प्रसाद मिश्र अथवा त्रिलोचन का काव्यगत परिचय निम्न बिंदुओं के आधार पर दीजिए- (अ) दो रचनाएं (ब) भाव-पक्ष-कला पक्ष (स) साहित्य में स्थान

उत्तर-

भवानी प्रसाद मिश्र

1. **जीवन-परिचय-** कवि श्री भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म सन् 1913 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के टिगरिया गाँव में हुआ। इन्होने जबलपुर से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इनका हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत भाषाओं पर अधिकार था। इन्होंने एक शिक्षक के रूप में कार्य प्रारंभ किया। फिर वे 'कल्पना' पत्रिका, आकाशवाणी व गाँधीजी की कई संस्थाओं से जुड़े रहे। इनकी रचनाओं में सतपुड़ा-अंचल, मालवा आदि क्षेत्रों का प्राकृतिक वैभव बिखरा पड़ा है। इन्हें साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश शासन का शिखर सम्मान, दिल्ली प्रशासन का गालिब पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया। इनकी साहित्य सेवा व समाज सेवा को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने इन्हें पद्म श्री की उपाधि से अलंकृत किया। इनका निधन सन् 1985 ई. में हुआ।

2. **रचनाएँ-** इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं- सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफरोश, चकित है दुःख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि। 'गीतफरोश' इनका पहला काव्य संकलन है। गाँधी पंचशती की कविताओं में कवि ने गाँधी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की है। इनके अतिरिक्त शरीर, फसलें और फूल, तूस की आग, शतदल आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

3. **काव्यगत विशेषताएँ-** भवानी प्रसाद मिश्र कविता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख कवियों में से एक है। गाँधीवाद में इनका अखंड विश्वास था। इन्होंने गाँधी वाड्मय के हिन्दी खंडों का संपादन कर कविता और गाँधी जी के बीच सेतु का काम किया। इनकी कविता हिन्दी की सहज लय की कविता है। इसलिए उन्हें कविता का गाँधी भी कहा गया है। इनकी कविताओं में बोलचाल के गद्यात्मक से लगते वाक्य-विन्यास को ही कविता में बदल देने की अद्भुत क्षमता है। इसी कारण इनकी कविता सहज और लोक के निकट है।

मिश्रजी की कविता में जीवन के सुख-दुःख है, प्रकृति का बहुरंगी सौंदर्य वह वर्तमान युग की विसंगतियां है, मध्यम वर्ग की विडम्बनाएँ हैं, मानव की गरिमा है और स्वाधीनता की चेतना भी अभिव्यक्त है।

4. **साहित्य में स्थान-** नई कविता के दौर के कवियों में मिश्रजी के काव्य में पर्याप्त व्यंग्य और क्षोभ है, किन्तु वह सृजनात्मक है। आप गाँधीवाद से प्रभावित एक श्रेष्ठ मानवतावादी कवि के रूप में हिन्दी में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

त्रिलोचन

1. **जीवन परिचय-** कवि श्री वासुदेव सिंह त्रिलोचन उत्तरप्रदेश के सुल्तानपुर जिले के चिरानी पट्टी में हुआ। ये हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील काव्यधारा के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों आप अनुशासन के कवि और बहुभाषाविद थे। इन्हें उपलब्धि के आधार पर इन्हें साहित्य अकादमी किया गया। उत्तरप्रदेश ने भी इन्हें 'महात्मा से सम्मानित किया। शलाका सम्मान' भी इन उपलब्धि रही है। इनका निधन 9 दिसम्बर, 200

2. **रचनाएँ-** इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं- **(अ) काव्य-** धरती, गुलाब और बुलबुल, दिगंत हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ, सरघाई हूँ, चैती, अमोला, मेरा घर, जीने की कला आदि **(ब) गद्य-** देशकाल, रोजनामचा, काव्य और अर्थ की कविताएँ। इसके अतिरिक्त हिन्दी के अनेक निर्माण में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

3. **साहित्यिक विशेषताएँ-** श्री त्रिलोचन जीवन लय के कवि हैं। प्रबल आवेग और त्वरा की अपेक्षा काफी कुछ स्थिर है। इनकी भाषा छायावादी रूमानि है तथा उसका काव्य ठाठ ठेठ का गाँव की जमीन है। ये हिन्दी में सानेट (अंग्रेजी छंद) को स्थापित कवि के रूप में भी जाने जाते है। आपने बोलचा को चुटीला और नाटकीय बनाकर कविताओं को दिया है।

4. **साहित्य में स्थान-** श्री त्रिलोचन हिन्दी साहित्य काव्य धारा के कवि के रूप में सदैव स्मरणीय र

प्रश्न 3. दुष्यंत कुमार अथवा, अक्क महादेवी क परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर दीजिए- रचनाएँ (ब) भाव-पक्ष- कला-पक्ष (स) साहि

उत्तर-

दुष्यंत कुमार

1. **जीवन परिचय-** कवि दुष्यंत कुमार का जन्म उ बिजनौर जिले के राजपुर नवादा गाँव में सन् 1933 था। इनके बचपन का नाम दुष्यंत नारायण था। काव इनकी बचपन से रुचि थी। प्रयाग विश्वविद्यालय एम.ए. किया। यहीं से इनका साहित्यिक जीवन आरं वहाँ की साहित्यिक संस्थाएँ 'परिमल' की गोष्ठियों रूप से भाग लेते रहे। 'नए पत्ते' जैसे महत्वपूर्ण पत्र जुड़े रहे। उन्होंने आकाशवाणी और मध्यप्रदेश के विभाग में काम किया। अल्पायु में इनका निधन सन् में हो गया।

@ASK_Classes

अर्जित किया। ये खड़ी बोली और आधुनिक हिन्दी साहित्य को स्थापित करने वाले लेखकों में से एक थे।

इन्होंने कई अखबारों का सम्पादन किया। उर्दू के दो पत्रों 'अखबार-ए-चुनार' तथा 'कोहेनूर' का भी सम्पादन किया। बाद में हिन्दी के समाचार-पत्रों 'हिन्दुस्तान' 'हिन्दी-बंगवासी', 'भारत मित्र' आदि का सम्पादन किया। इनका देहावसान सन् 2907 ई. में हुआ।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ पांच संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं- शिवशंभु के चिट्ठे, चिट्ठे और खत, खेल तमाशा, गुप्त निबंधावली, स्फुट कविताएँ।

3. साहित्यिक परिचय- गुप्त जी भारतेंदु युग और द्विवेदी युग के बीच की कड़ी के रूप में थे। ये राष्ट्रीय नवजागरण के सक्रिय पत्रकार थे। उस दौर के अन्य पत्रकारों की तरह वे साहित्य-सृजन में भी सक्रिय रहे। पत्रकारिता उनके लिए स्वाधीनता-संग्राम का हथियार थी। यही कारण है कि उनके लेखन में निर्भीकता पूरी तरह विद्यमान है।

इनकी रचनाओं में व्यंग्य-विनोद का भी पुट दिखाई पड़ता है। इन्होंने बांग्ला और संस्कृत की कछ रचनाओं के अनुवाद भी किए। वे शब्दों वे [illegible]।

4. साहित्य में स्था[illegible] [illegible]लमु[illegible] [illegible]ुप्त एक सफल पत्रकार, निर्भीक लेखक और [illegible]यक [illegible] रूप में हिन्दी साहित्य में सदैव अविस्मरणीय [illegible]।

प्रश्न 3. मन्नू भंडारी एवं शेखर जोशी का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए -

(अ) दो रचनाएँ (ब) भाषा शैली (स) साहित्य में स्थान

मन्नू भंडारी

1. जीवन-परिचय- मन्नू भंडारी का जन्म सन् 1931 ई. में मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ। इनका मूल नाम महेन्द्र कुमारी था। इनकी आरंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। उन्होंने एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। इन्होंने कोलकाता तथा दिल्ली के मिरांडा हाऊस में प्राध्यापिका के पद पर कार्य किया। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया गया। इन्हें हिन्दी अकादमी, दिल्ली के शिखर सम्मान, बिहार सरकार, कोलकाता की भारतीय भाषा परिषद्, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा सम्मानित किया गया।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखों देखा झूठ।

उपन्यास- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ)।

पटकथाएँ- रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

3. साहित्यिक विशेषताएँ- मन्नू भंडारी हिंदी कहानी में उस समय सक्रिय हुई, जब नई कहानी आंदोलन अपने शिखर पर था। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कहीं नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज में अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने आक्रोश, व्यंग्य और संवेदना को मनोवैज्ञानिक रचनात्मक आधार दिया है- वह चाहे कहानी हो, उपन्यास हो या फिर पटकथा ही क्यों न हो। उसका मानना है कि-

"लोकप्रियता कभी भी रचना का मानक नहीं बन सकती। असली मानक तो होता है रचनाकार का दायित्वबोध, उसके सरोकार, उसकी जीवन दृष्टि।"

4. साहित्य में स्थान- आधुनिक कहानीकारों व उपन्यास लेखकों में मन्नू भंडारी का विशिष्ट स्थान है। आपकी रचनाएँ मनोवैज्ञानिक आधार लिए हैं। पट-कथा-लेखन में आपकी प्रतिभा स्तुत्य है।

शेखर जोशी

1. जीवन परिचय- शेखर जोशी का जन्म उत्तरांचल के अल्मोड़ा नगर में सन् 1932 ई. में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में हुई। बीसवीं सदी के छठे दशक में हिन्दी कहानी में बड़े परिवर्तन हुए। इस समय का साथ कई युवा कहानीकारों ने परम्परागत तरीके से हटकर नई तरह की कहानियाँ लिखनी शुरू की। इस नए उठान को 'नई कहानी आन्दोलन' नाम दिया। इस आन्दोलन में शेखर जोशी का स्थान अन्यतम है। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए इन्हें पहल सम्मान प्राप्त हुआ।

2. रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी-संग्रह- कोसी का घटवार, साथ के लोग, दाज्यू, हलवाहा, नौरंगी बीमार है आदि।

शब्दचित्र-संग्रह- एक पेड़ की याद।

इनकी कहानियाँ कई भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, पोलिश और रूसी में भी अनूदित हो चुकी है। इनकी प्रसिद्ध कहानी 'दाज्यू' पर चिल्ड्रंस फिल्म का निर्माण भी हुआ है।

3. साहित्यिक परिचय- शेखर जोशी की कहानियाँ नई कहानी आन्दोलन के प्रगतिशील पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। समाज का मेहनतकश और सुविधाहीन वर्ग इनकी कहानियों में स्थान पाता है। निहायत सहज एवं आडंबरहीन भाषा-शैली में वे सामाजिक यथार्थ के बारीक पहलुओं को पकड़ते और प्रस्तुत करते हैं। इनके रचना-संसार में समकालीन जनजीवन की बहुविध विडम्बनाओं को महसूस किया जा सकता है।

4. साहित्य में स्थान- नई कहानी के लेखकों में शेखर जोशी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा।

❐ भाव पल्लवन / संवाद लेखन / अनुच्छेद लेखन / विज्ञापन लेखन

भाव पल्लवन

प्रश्न 1. साहित्य समाज का दर्पण है।

उत्तर- साहित्य समाज का दर्पण ऐसा कहने का अर्थ यही है कि साहित्य समाज का न केवल कुशल चित्र है अपितु समाज के प्रति उसका दायित्व भी है। वह सामाजिक दायित्वों का वहन करता हुआ उनको अपेक्षित रूप में निहारने में अपनी अधिक से अधिक और आवश्यक से आवश्यक भूमिका अदा करता है।

प्रश्न 2. अज्ञान सर्वज्ञ आदमी को पछाड़ता है?

उत्तर- अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है। आदमी की जिन्दगी में अज्ञानता सबसे बड़ा अभिशाप है। ज्ञान की पगडंडी पर ही कदम बढ़ाकर ही सत एवं असत् शुभ एवं अशुभ की परख करने की क्षमता उत्पन्न होती है। अज्ञानता विकास के मार्ग को अवरुद्ध करती है। अतः यह कथन सत्य है कि अज्ञान सर्वत्र आदमी को पछाड़ता है।

प्रश्न 3. क्रोध अंधा होता है।

उत्तर- क्रोध अंधा होता है, क्रोध की या तो आँख नहीं होती या क्रोध हमारी आँखों पर पर्दा डाल देता है। जब हम क्रोध के आवेग में होते है तो हमारा दिमाग संकुचित हो जाता है और हम अच्छे-बुरे या उचित अनुचित का भेद नहीं कर पाते। हमें सही गलत का फर्क दिखना बंद हो जाता है। इसलिए कहते है कि क्रोध अंधा होता है।

प्रश्न 4. चरित्र सबसे बड़ा धन है।

उत्तर- जीवन का सबसे बड़ा धन यदि कुछ है तो वह मनुष्य का चरित्र धन है। जो संस्कारों की पवित्रता से ही प्रकट होता है। बुरी आदतों से बचने पर ही प्रकट होता है। इसलिए अपने चरित्र के प्रति जो व्यक्ति शुरू से ध्यान रखते है और सजग रहते हैं उनके जीवन में बुराइयां कभी पनपती नहीं है।

प्रश्न 5. आज मर्यादाओं को फिर से पहचानना होगा।

उत्तर- आज तो मर्यादाओं को फिर से पहचानता है वह जमाना लद गया जब एक का हुक्म चलता था कोई भी वस्तु अपने आप में सब कुछ नहीं है। आज का जमाना वह नहीं, जब मनुष्य अपनी मर्यादा के लिए कुछ भी कर सकता है।

प्रश्न 6. सब उन्नति ...

संव...

प्रश्न 1. एक महिला और ...

उत्तर- महिला- भैया कुछ ...

सब्जीवाला- बहिनजी, ब...

महिला- तुम्हारी दुकान में ...

सब्जीवाला- बहिन जी अ... है। वैसे भी बरसात के मौ...

महिला- भैया तुम तो हर ... किलो आलू, एक किलो प...

प्रश्न 2. पिता-पुत्र में पढ़ा...

पिता- रोहित स्कूल में कै...

उत्तर- पुत्र- पापा सब अ...

पिता- तुम्हारे टेस्ट कब ...

पुत्र- जी पिताजी परन्तु गा...

पिता- अच्छा। तुम अपनी ... मार्क्स लाने की।

पुत्र- जी पिताजी परन्तु गा...

पिता- कैसी समस्या?

पुत्र- बीते दिनों बीमार ह... समझने बाकी है।

प्रश्न 3. आप अपने हिन्दी ... हुए संवादों को लिखिए।

उत्तर- शिक्षक- क्या तुम ... आए हो?

छात्र- मैं पहले उज्जैन में ...

शिक्षक- क्या तुमने तुम्ह...

छात्र- हाँ, सर मैंने अपने ...

शिक्षक- यहाँ का माहौल ...

छात्र- मुझे यहाँ का माहौ...

प्रश्न 4. दो मित्रों में ब... लिखिए।

उत्तर- राम- आजकल ...

मोहन- सही कह रहे हो ... सोचना पड़ता है कि बहु...

राम- सीधा-सादा खान... जाता है कि और कुछ ...

@ASK_Classes
18